

महादेशीय धाजा (मग्नतट)

भूमिका: - धरातल के करीब 29.2% भाग पर स्थलमण्डल एवं 70.80% भाग पर जलमण्डल का विस्तार है। जलमण्डल के अधिकांशतः सागर एवं महासागरों का विस्तार है।

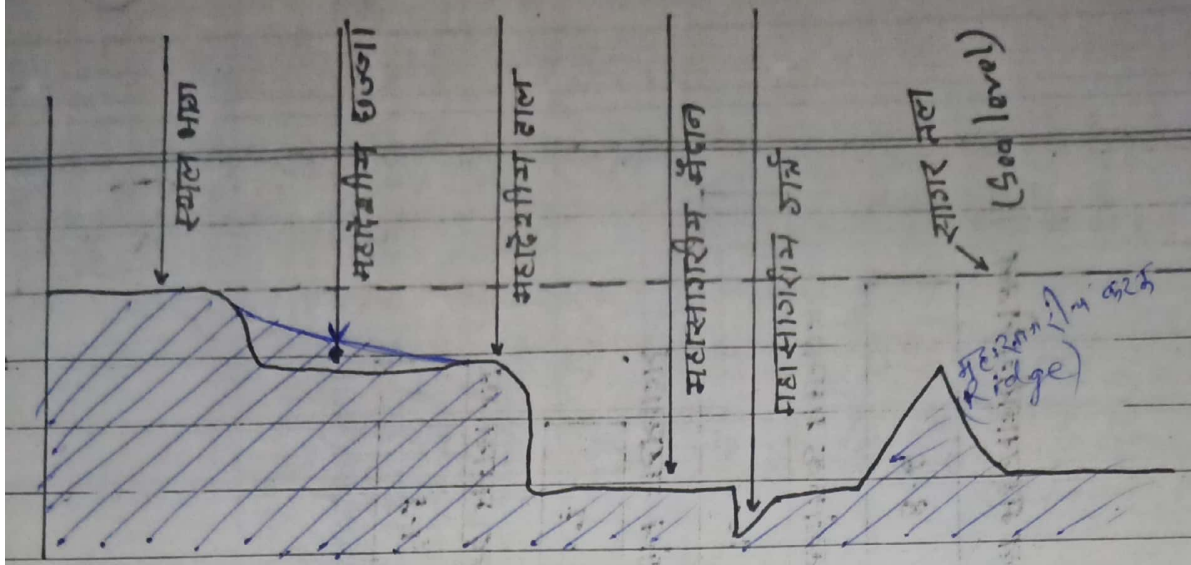
जलमण्डल	स्थलमण्डल
70.80	29.2

चित्र: → इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका के अनुसार स्थल एवं जलमण्डल का वितरण।

महासागरीय निम्नलक्षित स्वरूप नहीं है। अर्थात् यह अत्यंत ही विषम है। उच्चावच विभिन्नता के आधार पर महादेशीय धाजा, महादेशीय ढाल, महासागरीय मैदान, महासागरीय गर्त, महासागरीय कटक, द्वीप-चाप एवं द्वीप आदि प्रमुख प्रमुख विभाग है।

41.8	8.6	8.5	32.7	7	3.74
महासागरीय मैदान	महासागरीय धाजा	महासागरीय ढाल	कटक	गर्त	अन्ध

चित्र: - कुल महासागरीय पेंदी पर विभिन्न स्वरूपों का अनुपात (%) में



चित्र :- महासागरीय आकृतियाँ

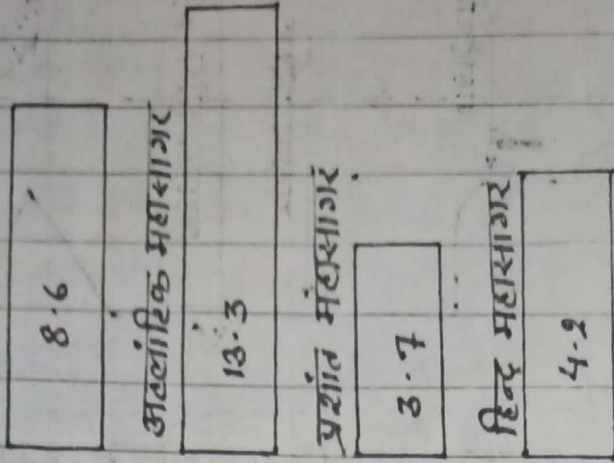
महादेशीय छिन्ना (मग्न तट)

परिभाषा :- महादेशीय छिन्ना स्थलखण्डों के निकटवर्ती क्षेत्रों में सागरों अथवा महासागरों के छिदले भाग हैं। इनकी गहराई 100 फुट या इससे कम होती है।

इनकी चौड़ाई में भी पर्याप्त क्षेत्रीय विभिन्नता पायी जाती है। संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्वी तटों के सहारे इनकी चौड़ाई 250 K.m. तथा यूरोप एवं रूस की उत्तरी तट के सहारे ये 1300 K.m. तक चौड़े हैं।

हालांकि सम्पूर्ण महासागरीय क्षेत्रफल के 8.6% पर इनका विस्तार है लेकिन विभिन्न महासागरों में इनका अनुपात में पर्याप्त भिन्नता पायी जाती है। अटलांटिक महासागर में इनका अनुपात सर्वाधिक एवं प्रशांत महासागर में सबसे कम है।

कुल महासागरीय जीवन



चित्र :- विभिन्न महासागरों में
जीवों के अनुपात (%) में

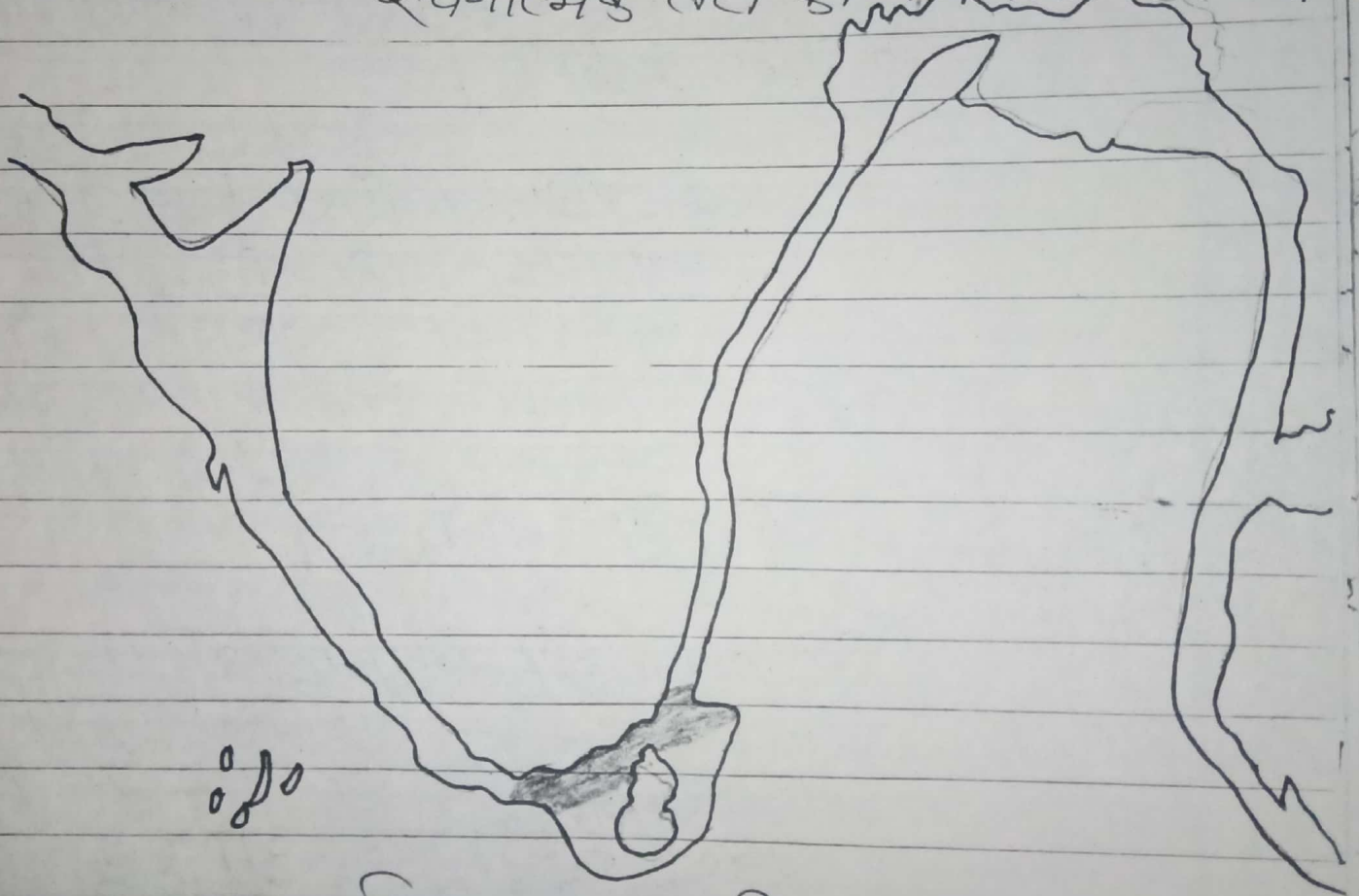
महादेशीय ध्वजा की उत्पत्ति :-
इनके स्वरूपों की
विविधता के कारण अनेक विद्वानों
के द्वारा इनकी उत्पत्ति के अनेक
कारण बताये गये हैं, जिनमें
निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं।

अपरदन एवं निक्षेप जन्य स्थला-
कृतियाँ :-

महादेशीय ध्वजा
दूर-दूर महादेशों के सागरों में मुख्य
विस्तार होते हैं। ये जहाँ एक ओर
सागरीय तलों के द्वारा अपरहित
होकर विस्तृत लैकफॉर्म के रूप में
विकसित होते हैं। वहीं सागरों
एवं सागरीय वरगों द्वारा इनके
ऊपर निरन्तर अवसादों की क्रिया
चलती रहती है। निक्षेपीय मल्लों
उत्पत्ति से सागरीय एवं ठोस
होकर महादेशीय ध्वजा का रूप

जलदा कर लेते हैं।

रचनात्मक भूगर्भतट :-> कुछ विद्वानों के अनुसार ये मात्र नदियां द्वारा एक लम्बे समय तक हुए निक्षेप के कारण निर्मित होते हैं। विश्व महासागरों में इनके लगातार निक्षेप के बढ़ते वास्तु के कारण निचु के मलव नीचे धारकर नये मलवा के लिये जगह प्रदान करते हैं। लम्बे असे तक इस प्रक्रिया से विस्तृत रचनात्मक तटों का निर्माण होता है।



चित्र :- भारतीय भूगर्भतट

अपरदन जन्य महादेशीय धुज्जा :-
हिमालयकाल के
सागरिय तल में गिरावट के कारण

पूरवती सागर तटीय क्षेत्र हिमनदीय अपरदन से घीस जाती है। हिमानी युग के समाप्तन के बाद हिम के चाकर जब पिघल जाते हैं तब सागर तल घुमः ऊपर उठ जाता है जिसके परिणामस्वरूप हिम अपरदित पूरवती तटीय प्रदेश जलमग्न होकर मग्नतर का निर्माण करते हैं।

~~परिणामस्वरूप~~ डेल्टा महोदय इस मत के प्रबल प्रवर्तक हैं, जिनके अनुसार एलियरीसीन हिम युग में इस चक्रवर्तों का काफी निर्माण हुआ है।

कुछ अन्य विद्वानों के शय में सागराभ तरंगों के अधिक वेगमान एवं सक्रिय होने पर तटीय भाग अपरदित होकर जलमग्न होने के बाद महादेशीय मग्नतरों के रूप में परिवर्तित हो जाता है।

संवहन तरंग की परिकल्पना :- महादेशों एवं महासागरों के तली से उठने वाली संवहन तरंगों महादेशों एवं महासागरों के मिलन रेखा के सहारे नीचे की ओर गिरता रहता है। इसके फलस्वरूप एक संकुचन बल के प्रभावकारी होने के कारण महादेशीय किनारे अवतलित होकर महादेशीय मग्न डेल्टा का

रूप ग्रहण कर लेता है।

असंजन्य निम्नतरः - बड़ा-बड़ा महास्थलाय तटों के समानान्तर असंजन्य, दरारों का विकास हो जाता है। इन दरारों के सहारे सागरवर्ती स्थलाय नीचे धंसकर जलमग्न हो जाते हैं एवं महादेशीय छज्जा का बालू अप्रितयार कर लेते हैं।

भारत के पश्चिमी तट के सहारे स्थित मग्नतर पश्चिम घाट पहाड़ के निर्माण काल में विकसित अस के सहारे इस तरह धंसने से निर्मित हुआ है।

डेल्टा जन्य मग्नतरः - बड़ी नदियों की मुहानों पर जब डेल्टा निर्माण की प्रक्रिया विव्र होती है तब डेल्टा के बड़े हिस्से जलमग्न तटों के रूप में विकसित हो जाते हैं। गंगा, गोदावरी, कृष्णा एवं कावेरी आदि नदियों के मुहानों के सामने इस प्रकार उदाहरण विकसित हुआ है।

चौड़ी नदी ह्रा मग्नतरः - जब बड़ी नदियों के मुहाने अत्यधिक चौड़े होते हैं परंतु डेल्टा का निर्माण नहीं हो पाता है तब कुमी-कुमी ऐसे मुहाने अत्यधिक चौड़े होकर मग्नतर के रूप में विकसित हो जाते

हैं। नमूना एवं तापनी आदि नदियाँ
के सहारे विकसित चाड़ि मनुष्य
इसके अर्ध उदाहरण है।

पुवाल जन्य मनुष्य - पुवाल
निक्षेपों के कारण भा उच्च मनु-
ष्यों का निर्माण होता है। भारत
ज्वालका के मध्य स्थित पाक
जलडमरूमध्य व मन्नार की
खाड़ी के मनुष्य इसके अर्ध
उदाहरण है।